प्रथम अध्याय

शेखर ोशी : व्यक्तित्व और कृतित्व

‘नई कहानी’ के ा ित कहानीकारों में से प्रेम ंद की यथार्थ पंरपरा में लिखनेवालों में से शेखर ोशी प्रमुख हैं। उनका न्म अश्विन 3, संवत 1989 (सन् 1932) को अल्मोडा ानपद (उत्तर प्रदेश) के ‘ओलियागाँव’ में एक किसान परिवार में हुआ था।

प्रारंभिक शिक्षा अ ामेर और देहरादून में हुई। इंटरमीडियट की प ़ाई के दौरान ही सुरक्षा-विभाग में ई.एस.ई. अप्रेंटिसशिप के लिए ायन। उस अप्रेंटिसशिप के दौरान ही प्रगतिशील लेखकों, ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं और पत्रकारिता ागत से संपर्क हुआ। सन् 1955 से 1986 तक इलाहाबाद में एक सैनिक औद्योगिक प्रतिष्ठान में कार्यरत रहे। कथा लेखन को दायित्वपूर्ण कर्म माननेवाले सुपरि ात र ानाकार शेखर ोशी ने तत्पश ात् स्वै छिक रूप से पद त्यागकर स्वतंत्र लेखन का कार्य अपनाया। लेखन की शुरुआत कविताओं से हुई और फिर मुख्यतः कहानियों पर केंद्रित रहे।

साहित्यिक ीवन

र ानाकार ाब अपनी संवेदनाओं या अनुभवों को कलात्मक ंग से कागज़ पर लिखता है तो वह र ाना बन ाती है। उस र ाना के मूल में अपने अनुभवों या अनुभूतियाँ हो सकती हैं या समा ा में घटित होनेवाली घटनाएँ हो

सकती हैं या उन घटनाओं को अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा प्रस्तुत करनेवाली और कोई विषय वस्तु हो सकती है। इस क्रम में कई अंश ैसे सामा ाक, सांस्कृतिक, आर्थिक, रा ानीतिक परिस्थितियाँ या पारिवारिक स्थितियाँ या मित्र ैसे अनेक अंश र ानाकार को प्रभावित करनेवाले घटक हो सकते हैं।

र ानाकार को प्रभावित करनेवाले विषयों के बारे में स्वयं शेखर ोशी कहते हैं कि-"र ानात्मक लेखन एक सापेक्ष प्रक्रिया है। मनुष्य के मानसिक संस्कार, विभिन्न सामा ाक स्थितियों का दबाव, व्यक्तिमन का अहं, नि ाी अस्तित्व की पह ाान का आग्रह, राग-विराग, भावनात्मक संवेग, संवेदनक्षमता और नि ाी अनुभवों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देख पाने की दृष्टि कई ऐसे कारक हैं ो मिलकर संवेदना को र ाना तक पहुँ ाने में सहायक होते हैं या उसका कारण बनते हैं। मूलतः ये परिवेशगत स्थितियाँ ही हैं ो एक र ानाकार को दूसरे र ानाकार से भिन्न धरातल पर आंदोलित करती हैं।"[1]

शेखर ोशी के लेखन कार्य को प्रभावित करनेवाले अंश उनकी परिवेशगत स्थितियाँ ही हैं। क्योंकि अनुवंशिक या ींस कहने के लिए पितृपक्ष में इसका लिखित साक्ष्य नहीं है। और मातृ पक्ष में उनके मँ ाले मामा पंडित श्रीकृष्ण पंत शास्त्री हैं ो महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविरा ा के प्रिय भा ान थे और काशी के विद्वत् समा ा में उनका अ छा सम्मान था। उन्हें लगातार लेखन-कार्य करते हुए शेखर ोशी देखते थे।

शेखर ोशी का परिवार पहाड़ के छोटे-भूस्वामियों का परिवार था। पराये श्रम से समृद्ध और वर्णदृष्टि के लिए पूरी तरह समर्पित। उनके घर में व्यंकटेश्वर प्रेस, मुंबई से प्रकाशित बड़े आकार के पन्नों में मुद्रित भागवत और महाभारत की ो पुस्तकें थीं ि न्हें वैशाख ोठ की अलस दुपहरियों में

[1] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.7

घर के आँगन में एकत्र होकर ब ो-बू े भक्तिभाव और तन्मयता से भागवत का पाठ सुनते हुए ऊँघते रहते थे। उन्हें कभी-कभी 'माधुरी' और ' ाँद' की प्रतियाँ भी देखने को मिल ाती थीं। 'ब्रह्मानंद स्तोत्र' का भ ान उन्हें बहुत प्रिय थे। ि न्हें वे अक्सर गुणगुणाते रहते थे। उनका तनमयता देखकर उनकी माँ कहती थीं-"वह ोगी हो ाएगा...। नबि िया वैद्य क्या देखे, मु ो दिल की बीमारी है... की तरह के भ ान उन्हें बहुत प्रिय थे। काव्य का उनका प्रारंभिक परि ाय इन्हीं गीतों-भ ानों से हुआ था।

उनका ब ापन पूरा ग्रामीण वातावरण में संगीतमय था। अपनी परिवतेशगत स्थितियों के बारे में स्वयं शेखर ोशी कहते हैं कि-" ान्मदिन, छठी, नामकरण, अन्नप्रासन से लेकर यज्ञोपवीत और विवाह-संस्कार के गीतों का अटूट सिलसिला ालता ही रहता। बू ी पुरखिनों के पास इन गीतों का अक्षय भंडार था। सुमधुर ही नहीं, कर्कश या घेघायुक्त घर्घर कण्ठों की भागीदारी भी इनमें रहती थी ि ससे एक मनोरं ान का अनुभव होता था। खेती के सामूहिक गीतों के लिए तो हमारा अं ाल विख्यात है ही। गोडाई, धानरोपाई के दिन खेतों में किसी त्योहार-पर्व की सी रौनक रहती थी। हुड़के की थाप पर कमकर स्त्रियाँ अपने रंगबिरंगे परिधानों में गले में मूँगे और ाँदी के सिक्कों की मालाएँ ुलाते गीत की लय पर गोडाई या रोपाई करती ातीं और पूरी घाट उनके गीतों से गूँ ा उठती। ाड-वनों की साँय-साँय के बी ा, भरी दुपहरी में, कहीं दूर बंसी का स्वर उठता और कहीं दूसरी पहाड़ी से कोई ारवाहा या घसयारिन गीत की एक पंक्ति उठा देती। कुछ क्षणों के लिए वनप्रांतर में निस्तब्धता रहती और फिर प्रत्युत्तर में दूसरी ओर से पूरक पंक्ति का आलाप

उठता। ये मार्मिक और सारगर्भित तुकबंदियाँ हुआ करती थीं।"[2] इस प्रकार उनका ब ापन ग्रामीण वातावरण में संगीतमयता के साथ बीता था।

शेखर ोशी ब ापन में प्रकृति के बहुत निकट थे। वे उतना निकट थे कि पेड़ों की अलग-अलग पह ान के लिए उन्हें नामांकित किया गया था। और एक ेर में रखे हुए अखरोट या दाडिमों को देखकर ही वह पह ान ाते थे कि यह किस पेड़ का फल है। इसके साथ-साथ वे पशुओं से भी एक प्रकार का पारिवारिक रिश्ता रखते थे। ाब वह किसी गाय का नाम लेकर पुकारते थे तो ोरों के ुण्ड में से उस नाम की गाय रंभाती हुई ाली आती थी। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि शेखर ोशी अपने ब ापन में प्रकृति के (पशु-पक्षियों से) बहुत निकट थे।

उनका यह परिवेश ाहाँ एक ओर अपार प्राकृतिक सौंदर्य, गीत-संगीत और सांस्कृतिक गतिविधियों से समृद्ध था, वहीं दूसरी ओर ारों ओर निपट गरीबी, दैन्य और मानवीय शोषण का ाल भी फैला हुआ था। उन सभी स्थितियों ने शेखर ोशी को प्रभावित किया है। वह परिवार की सामंती और रू ि वादी मान्यताओं से मुक्ति पाना ाहते थे। उनके लिए यह असंभव होता यदि उनका परि ाय गोर्की, राहुल, प्रेम ंद, यशपाल आदि लेखकों की र ानाओं से न हुआ होता। आगे ालकर ाब वे र ाना करने लगे तब उनकी र ानाओं में विषम परिस्थितियों को रेखांकित करने का प्रयत्न किया है।

ब ापन में कोर्स की पुस्तकों के अतिरिक्त पहली साहित्यिक कृति ो उन्हें ननिहाल में देखने को मिली वह कविवर सुमित्रानंदन पंत की 'उ छ्वास' नाम की एक पतली-सी काव्य पुस्तक थी। उस पुस्तक से ही उन्हें पंत ी की कविताओं के शब्द-विन्यास और भाषा सौंदर्य से परि ाय मिला। ब ापन में वे

[2] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.8

अंग्रेज़ी के अध्यापक महोदय के निर्देशन में हाथों में हॉकी स्टिक लेकर पूरी क्लास द्वारा 'मा र्ि ऑफ दि लाइटब्रिगेड' कविता का सभिनय पाठः कैन्नौन टु द राइट, कैन्नौन टु द लेफ्ट करवाते थे। तभी उन्हें कविता की शक्ति का एक नया साक्षात्कार मिला। इस प्रकार की परिवेशगत स्थितियों ने शेखर ोशी में कविताओं के प्रति रु ा पैदा करवायी। इसीलिए उन्होंने अपने लेखन की शुरुआत कविताओं से की है।

छोटी उम्र में ही ीवन की परिस्थितियों ने उन्हें विभिन्न भौगोलिक और सामा ाि क परिवेशों में ीने के लिए विवश किया है। छोटी उम्र में ही मातृविहीन हो ाने के कारण बाद में उन्हें पर्वतीय अं ाल के प्राकृतिक सौंदर्य से वनस्पतिविहीन रा ास्थान में रहना पड़ा। वहाँ रहने का दुःखद अनुभव और अपने परि ाित परिवेश से कट ाने की कष्टप्रद अनुभूतियों ने उनकी संवेदना की धार को तेज़ कर दिया। सम ा विकसित होने पर ाब वे अपने नि ी अनुभवों को सामा ाि क परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रक्रिया में उन्होंने 'दा यु' कहानी लिखी। उस कहानी के बारे में स्वयं शेखर ोशी कहते हैं कि-"'दा यु' कहानी लिखी तो उसका नायक मेरा ही प्रतिरूप था ो अपने परिवेश से विस्थापित होकर अपरि ाितों की भीड़ में किसी आत्मीय को खो ा रहा था, लेकिन सामा ाि क यथार्थ ने उसे अहसास करा दिया था कि आत्मीय संबंधों के मूल में भी वर्ग स्वाथ होते हैं ो मानवीय संबंधों में दरार डाल देते हैं।"[3]

उन्होंने ीवन में कई उतार- ा.ाव देखे हैं। उनके ीवन का एक महत्वपूर्ण भाग कारखानों में बीता है। वहाँ के अपने अनुभवों को उन्होंने कहानियों के रूप में प्रस्तुत किया है। औद्योगिक परिवेश की कहानियाँ लिखने की प्रेरणा उन्हें वहाँ से ही मिली है। इस संबंध में वे कहते हैं कि-"यहीं मु ो

[3] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.10

‘उस्ताद’ मिले ो न ाहते हुए भी अंतिम क्षणों में अपने शागिर्द को काम का गुर सिखाने को म ाबूर थे, यहीं हाथों की ‘बदबू’ में मैंने ि ा ीविषा की तलाश की, यहीं ईमानदार लेकिन ‘मेंटल’ करार दिए गए लोग थे, यहीं विरोध की आखरी ि ंगारी लिये ‘ ी ह ूरिया’ किस्म के लोग थे। यहीं ‘नौरंगी मिस्त्री’ था और यहीं मैंने श्यामलाल का ‘आशीर्व ान’ सुना और इन सबको अपनी कहानियों में अंकित कर पाया।"[4]

अतः शेखर ोशी पहले कहानीकार हैं ि ान्होंने पहली बार औद्योगिक परिवेश की कहानियाँ लिखी हैं।

प ाास के दशक में उनका संपर्क लेखकों की ामात से दिल्ली में हुआ था। उस समय प्रगतिशील लेखक संघ की गतिविधियाँ ोरों पर थीं, ि ाससे उनकी वि ारधारा को एक दिशा मिली। सन् 55 में इलाहाबाद आने पर उनका संपर्क उनके अग्र ा और समकालीन लेखकों से हुआ था। तभी अपनी ौविक व्यस्तताओं के बी ा समय निकाल कर साहित्य का अध्ययन और अभ्यास करने का सुयोग उन्हें मिला। यहाँ आने के बाद उन्हें लगभग सभी नये और पुराने पी ़ी के प्रमुख लेखकों से मुलाकात हुई थी क्योंकि इलाहाबाद में ही यादातर लेखकों का ामघट है। प ाास और साठ का दशक गहरी साहित्यिक सरगर्मियों का काल रहा है। उस समय ‘प्रगतिशील’ और ‘परिमल’ खेमों में स्वस्थ र ानात्मक प्रतिस्पर्धा ालती रहती थी। उसी समय ‘संकेत’, ‘हंस’ और ‘निकष’ ौसे महत्वपूर्ण साहित्यिक संकलनों का प्रकाशन हुआ था। यही वह समय था ाब भैरवप्रसाद गुप्त के संपादन में निकलने वाली ‘कहानी’ पत्रिका के माध्यम से कहानी प्रमुख साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो रही थी। इन्हीं वर्षों में इलाहाबाद का अभूतपूर्व लेखक-सम्मेलन हुआ था, ि ासमें मुक्तिबोध

[4] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.11

भी आए थे और तब के नये कवि श्रीकांत वर्मा ने अपनी पह ान बनायी थी। इन सब आयो ानों में उनकी सा ीदारी का सौभाग्य उन्हें इलाहाबाद की अप्रेन्टिसशिप के कारण ही मिला था। इस प्रकार के साहित्यिक परिवेश से उन्हें प्रेरणा मिली।

शेखर ोशी ने अपने लेखन कार्य की शुरुआत कविताओं से की है। उन्होंने एक कविता में पहाड़ के उदासी ीवन को निम्न प्रकार से ित्रित किया है-

"भूरी मटमैली ादर ओ़े
बू े पुरखों से ार पहाड़
मिल- ुल बैठे ऊँघते-ऊँघते।
घाटी के ओठों से कुहरा उठता
मन-मारे, थके-हारे, बे ारे
दिन-भर िलम फूँकते-फूँकते-फूँकते।"

शेखर ोशी एक सफल कहानीकार हैं। उन्होंने अब तक 60 से भी यादा कहानियाँ लिखी हैं। उनकी पहली कहानी 'दा यु' है िसे सन् 1953 में अपनी पत्रिका 'पर्वतीय ान' के लिए लिखा था ो बाद में साहित्यिक संकलन 'संकेत' में प्रकाशित होकर ाित हुई। िसके संपादक अश्क थे। उसके बाद उन्होंने सन् 1957 में 'कोसी का घटवार' नामक कहानी लिखी ो 'कल्पना' पत्रिका के ानवरी अंक में प्रकाशित होकर ाित हुई।

इसी प्रकार उन्होंने कई ाित और प्रमुख कहानियाँ लिखी हैं। ैसे- बदबू, मेंटल, सीि़याँ, उस्ताद, नौरंगी बीमार है, आशीर्व ान, डांगरी वाले, ब ो का सपना, साथ के लोग, मृत्यु, दौड़, कविप्रिया, सहयात्री, पुराना घर,

नेक्लेस, गाइड, निर्णायक, हलवाहा, समर्पण, बिरादरी, कथा-व्यथा, बो ा, रंगरुट, परिक्रमा, विस ि, आदमी का डर, रास्ते, किं करोमि ानार्दन आदि।

उनके कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। पहला कहानी संग्रह 'कोसी का घटवार' सन् 1958 में प्रकाशित हुआ था। उनके कहानी संग्रहों की सू ी कालक्रम के साथ निम्नलिखित है।

अनुवाद :- उनकी कुछ कहानियाँ विभिन्न भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेज़ी, रूसी, पोलिश, ोक और ापानी भाषाओं में अनूदित हैं।

फिल्म :- 'दा यु' और 'कोसी का घटवार' नामक कहानियों पर फिल्म निर्मित हैं। 'दा यु' कहानी का फिल्म रूपांतरण िल्ड्रन फिल्म सोसायटी और दूरदर्शन के द्वारा हुआ था।

मं ान :- उनकी ार कहानियों का मं ान 'रवींद्रालय' लखनऊ में देवेंद्ररा । अंकुर के द्वारा किया गया है।

ऑडियो कैसेट :- 'हलवाहा' तथा 'नौरंगी बीमार है' में संकलित कहानियों का ध्वन्यांकन 'टॉकिंग बुक सेंटर' के द्वारा बंबई में छः कैसेट्स में किया गया है।

सम्मान/पुरस्कार :- सन् 1955 में 'धर्मयुग' द्वारा आयोि ात कहानी-प्रतियोगिता में उन्हें प्रथम पुरस्कार मिला था। उसके बाद सन् 1987 में 'एक पेड़ की याद' शब्द ित्र संकलन के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के 'महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार' से सम्मानित हैं। साहित्य भूषण सम्मान, पहाड़ सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान इत्यादि इनके अन्य सम्मान हैं।

1. कोसी का घटवार-नया साहित्य प्रकाशन, 1958
2. साथ के लोग-संभावना प्रकाशन, 1978
3. मेरा पहाड़, लोकभारती प्रकाशन, 1989

4. प्रतिनिधि कहानियाँ, रा ाकमल पेपर बैक्स, 1994

5. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन, 1997

6. डांगरी वाले, आधार प्रकाशन, 1998

7. नौरंगी बीमार है, रा ाकमल प्रकाशन, 1998

8. ब ो का सपना, संभावना प्रकाशन, 2004

9. हलवाहा

इन के अलावा 'एक पेड़ की याद' नामक शब्द-ि ात्रों का संग्रह भी है।

आवरण ि ात्र :- सुबायत यादव (2 अक्तूबर, 1958, ौनपुर) की ि ात्रकृति। बनारस विश्वविद्यालय से कला-स्नातक। ललित कला अकादमी, उत्तरप्रदेश, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली (1983) तथा त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ल ाी (1987) में एकल कला प्रदर्शिनियाँ। ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश द्वारा कुछ ुनिंदा कलाकारों के साथ आयोि ात प्रदर्शनी-अहमदाबाद और ायपुर (1983) तथा तीन कलाकारों के साथ पराड़कर स्मृति भवन, वाराणसी (1983) में कलाकृतियों का प्रदर्शन। अन्य अनेक कला-प्रदर्शनियों में भी हिस्सेदारी। अन्य रा यों में आयोि ात कला-प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत-प्रशंसित। ललित कला अकादमी, नई दिल्ली तथा राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा, नई दिल्ली समेत अनेक कला-दीर्घाओं और नि ाी संग्रहों में काम शामिल हैं। संप्रति, इंडिया टुडे (हिंदी) में कला-संपादक।

* * *